संन्यासः =संन्यास; **तु** =परन्तु; **महाबाहो** =हे महाबाहु; **दुःखम्** =दुःखदायक है; **आप्तुम्** =प्राप्त होना; **अयोगतः** =भक्तियोग के अभाव में; **योगयुक्तः** =भक्त; **मुनिः** =चिन्तक; **ब्रह्म** =परतत्त्व को; **न** =बिना; **चिरेण** =विलम्ब; **अधिगच्छति** =प्राप्त हो जाता है।

अनुवाद

भक्तियोग के बिना केवल कर्मसंन्यास द्वारा सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती। परन्तु भक्तिभावित कर्म से शुद्ध हुए ऋषिजन श्रीभगवान् को अति शीघ्र प्राप्त कर लेते हैं।।६।।

तात्पर्य

संन्यासी दो प्रकार के होते हैं—एक मायावादी, दूसरे वैष्णव। मायावादी सांख्यदर्शन के स्वाध्याय में लगे रहते हैं तथा वैष्णव संन्यासी वेदान्तसूत्र के सच्चे भाष्य—श्रीमद्भागवत-दर्शन का अध्ययन करते हैं। मायावादी संन्यासी वेदान्तसूत्र का अध्ययन तो करते हैं; परन्तु वे केवल शंकराचार्य द्वारा रचित अपने सम्प्रदाय के शारीरक भाष्य को उपयोग में लाते हैं। दूसरी ओर, भागवतधर्म के अनुयायी पाँचरात्रिक की विधि के अनुसार भगवद्भक्ति में संलग्न रहते हैं। वैष्णव संन्यासी वास्तव में चिन्मय भगवद्भक्ति में नाना कार्य करते हैं। वैष्णव संन्यासियों को सांसारिक क्रियाओं से लेशमात्र भी प्रयोजन नहीं; फिर भी भगवद्भक्ति के सम्पादन में वे विविध क्रियाएँ करते हैं। पर सांख्य और वेदान्त के स्वाध्याय एवं मनोधर्म में लगे हुए मायावादी संन्यासी भगवद्भक्ति का आस्वादन नहीं कर पाते। उनका अध्ययन अत्यन्त श्रमावह हो जाता है, इसलिए कभी-कभी ब्रह्मविषयक मनोधर्मी से श्रान्त, भ्रान्त एवं क्लान्त होकर पर्याप्त बोध के बिना ही वे श्रीमद्भागवत का आश्रय ग्रहण कर लेते हैं। इस कारण उनके लिए श्रीमद्भागवत का अध्ययन भी क्लेशप्रद है। मायावादी संन्यासियों का शुष्क मनोधर्म तथा वाग्चातुर्य उनके लिए बिल्कुल निरर्थक सिद्ध होता है। दूसरी ओर, भगवद्भक्ति-परायण वैष्णव संन्यासी अपने दिव्य कर्तव्यों के पालन में सुखानुभूति करते हैं और यह भी निश्चित रहता है कि अन्त में उन्हें भगवद्धाम की प्राप्ति हो जायगी। मायावादी संन्यासी तो कभी-कभी आत्मतत्त्व के मार्ग से भ्रष्ट होकर समाजसेवा, परोपकार आदि प्राकृत क्रियाओं में ही फिर प्रवृत्त हो जाते हैं। अतः सारांश में कृष्णभावनाभावितभक्त केवल ब्रह्मपरक मनोधर्म करने वाले संन्यासियों से श्रेष्ठ हैं, यद्यपि इन्हें भी बहु जन्मान्तरों के पश्चात् कृष्णभावनामृत की प्राप्ति हो जाती है।

15/7

योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः।
सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन्नपि न लिप्यते।।७।।

योगयुक्तः =भक्तियोग में तत्पर; **विशुद्धात्मा** =शुद्ध अन्तःकरण वाला; **विजित-आत्मा** =आत्मसंयमी; **जितेन्द्रियः** =इन्द्रियविजयी; **सर्वभूत आत्मभूत आत्मा** =सब जीवों